दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ______

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	5	0	6	0	7	3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविंद

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

पद्य खंड के उत्तर अच्छे हैं
गद्य खंड के उत्तरों को
बेहतर बनाएं

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 126 टिप्पणी (Remarks): बेहतर बनाएं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: 10 × 5 = 50

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

कबीर की काव्यचेतना में आध्यात्मिकता और प्रतीकात्मकता में एक प्रकार का अभेद बना रहता है। प्रतीकात्मकता उनके यहाँ साधन है और आध्यात्मिकता साध्य। प्रस्तुत साखी कबीर की इसी काव्यचेतना को प्रकट करती है, जो श्यामसुंदर दास कृत 'कबीर ग्रंथावली' से उद्धृत है।

प्रस्तुत साखी में गुरु और विरह शीर्षक भावनाओं को एक साथ संगुम्फित देखा जा सकता है। कबीर का मंतव्य है कि इस अज्ञान रूपी अंधकार से परिपूर्ण जगत में गुरु ने उन्हें ज्ञान रूपी दीपक प्रदान किया है। इस ज्ञान रूपी दीपक में गुरु के स्नेह का तेल और प्रेम रूपी कभी न समाप्त होने वाली बाती है।

ऐसे दीपक की सहायता से कबीर ने इस जग का व्यापार समाप्त कर लिया है और वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने प्रियतम ईश्वर से जा मिले हैं। इसीलिए इस जगत रूपी बाजार में वे पुनः नहीं आएंगे।

काव्य सौंदर्य - भाषा - सधुक्कड़ी (खड़ी, अवधी में पंजाबी प्रभाव)
रस - शांत
छंद - दोहा
अलंकार - अनुप्रास, रूपक (सांगरूपक)

विशेष - ① कबीर की प्रतीकात्मकता दृष्टव्य है।
② ज्ञान से ही भवबंधन से मुक्ति मिल सकती है, ऐसा कबीर का मंतव्य है।
③ गुरु, ज्ञान और प्रेम के महत्त्व का प्रतिपादन किया है।

——x——

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

सूरदास कृत 'भ्रमरगीतसार' का मुख्य प्रतिपाद्य वस्तुतः गोपियों और उद्धव के वाद-विवाद के माध्यम से सगुण भक्ति-विरोधतः कृष्णभक्ति के महत्त्व का प्रतिपादन है।

भ्रमरगीतसार से उद्धृत प्रस्तुत पद में उद्धव के उपदेश देने पर गोपियों के उपालम्भ को प्रदर्शित किया गया है।

गोपियाँ उद्धव को उपालम्भ देते हुए कहती हैं कि जिस व्यक्ति या जीव की जो प्रकृति (स्वभाव) होती है, वह वैसा ही आचरण करता है। जैसे करोड़ों प्रयत्न करने पर भी कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती, जन्म के बाद से ही कौआ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार नहीं रखता, काले कम्बल का रंग क्या धोने से उज्ज्वल हो जाता है? और क्या डसने से साँप का पेट भरता है?

अर्थात् वह तो ऐसा स्वभाववश ही करता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। तो जैसे जगत के अन्य जीव अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करते हैं, वैसे ही उद्धव का स्वभाव भी शुष्क और रूखा है। इसीलिए वे शुष्क व्यवहार कर रहे हैं।

काव्यसौंदर्य - भाषा - ब्रजभाषा
रस - शांतरस
छंद - गेयपद
अलंकार - अनुप्रास, प्रतीप

विशेष - ① व्यावहारिक जीवन से उदाहरण देना गोपियों की स्वाभाविकता का परिचायक है।
② उद्धव के निर्गुण मत पर उपालम्भ किया गया है।

6/10

——— x ———.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

जायसी कृत 'पद्मावत' के 'नागमती-वियोग-वर्णन' को हिंदी साहित्य में विशिष्ट महत्व प्रदान किया गया है। कवि बारहमासे के माध्यम से प्रकृति के हर रूप को नायिका के विरह को बढ़ाने वाला प्रदर्शित कर रहा है।

कवि के अनुसार विरह-संतप्त नायिका के लिए ज्येष्ठ माह की लू बवंडर के समान प्रतीत हो रही है। बिरह रूपी हनुमान ने तन रूपी लंका को जला दिया है। चारों प्रकार की पवनों ने इस आग को और तीव्र कर दिया है, जो लंका के बाद अब मेरे पर्यंक को भी जला रही है।

यह विरह की आग इतनी तीव्र है कि इससे दग्ध होकर यमुना नदी श्यामवर्णा हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गई है। इसे धीमा नहीं किया जा सकता है। ऐसा लग रहा है जैसे आंधी और आग साथ-साथ इस विरह को बढ़ा रही है। नैनों को कुछ सूझ नहीं रहा है कि इस दुख की गठरी को बांधकर कहाँ जाऊं।

जलकर मैं (नायिका) आधी हो गई हूँ। विरह रूपी भूखा काग माँस खाकर अब हड्डियों को भी खाना चाहता है। हे प्रिय! अगर आप अब भी आ जाएं तो विरह आपकी आवाज सुनकर भाग जाएगा।

जायसी के अनुसार पर्वत, समुद्र, मेघ, चंद्र या सूर्य इस विरहाग्नि को सह नहीं सकते। यह तो सती का ही माहात्म्य है जो इस विरहाग्नि को सहन कर सकती है।

काव्य सौंदर्य - भाषा - अवधी
रस - विप्रलंभ शृंगार
छंद - चौपाई और दोहा
अलंकार - अलंकार, रूपक

विशेष - ① बारहमासा की काव्यरूढ़ि
② सती का मध्यकालीन आदर्श।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) किसबी किसान कुल बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

'कवितावली' जैसी परवर्ती कृतियों में हमें कवि तुलसीदास का अधिक यथार्थवादी स्वरूप देखने को मिलता है। उपरोक्त पंक्तियों में तुलसीदास ने तत्कालीन समाज की दुरवस्था का चित्र खींचा है। निम्न वर्गों के लिए तो यह स्थिति कलि-काल जैसी है।

तुलसीदास के अनुसार अकाल जैसी परिस्थिति गरीबों के लिए साक्षात कलियुग है। तुलसी के अनुसार व्यापारी, कृषक, पंडित जैसे कार्यों-व्यवहारों में लगे लोग अब ऐसे पेशों में प्रवृत्त हो रहे हैं जो पेट की आग को बुझा सके। वर्गों के ऊंचे-नीचे होने का विवेक किसी को भी सूझ नहीं रहा है।

तुलसीदास के अनुसार अवस्था इतनी वीभत्स है कि लोग 'सद्गुण' और विवेक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से डर जा रहे हैं और पेट की आग बुझाने के लिए बेटे-बेटी तक को बेच दे रहे हैं।

विशेष - भाषा - ब्रजभाषा
छन्द - कवित्त
अलंकार - अनुप्रास

तुलसी ने अकाल और गरीबी पर मध्यकालीन कवियों में सर्वाधिक ध्यान दिया है। वे कहते हैं कि -

"कलि बारहिं बार दुकाल परै।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

गरीबी की तुलना वे रावण से करते हैं।

"दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबंधु
दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी।"

———x———

6½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुरानन लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

सूरदास कृत 'भ्रमरगीतसार' में गोपियों ने उद्धव के शुष्क ज्ञान से तंग आकर उस पर उपालम्भ प्रारम्भ कर दिया है। प्रस्तुत पंक्तियों में यही प्रसंग दृष्टव्य है।

गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करती हैं कि उद्धव तो योग का निदर्शन कर रहे हैं। वे परमार्थ और पुस्तकीय ज्ञान को ऐसे लादे हुए हैं जैसे बंजारे अपना बोझ लादे रहते हैं। हमारी गति तो कमलनयन कृष्ण में लगी है और तुम हमें जोग सिखा रहे हैं।

गोपियों का तर्क है कि ये तीनों प्रवृत्तियाँ एक साथ नहीं चल सकतीं। जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं, साथी के साथ गन्ना नहीं खाया जा सकता। दूध-घी छोड़कर मट्ठा खाने से मिली शूल मिट सकती है तुम क्यों इन प्रवृत्तियों को मिलाना चाहते हो.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनमें स्वाभाविक विरोध है। गोपियों का तर्क है कि जैसे - अनिया, धान और कुम्हड़ा के लिए अलग - अलग बारिश वाला मौसम उपयुक्त है, उन्हें एक - साथ नहीं उपजाया जा सकता।

सौंदर्य - भाषा - ब्रजभाषा
रस - शांत
छन्द - गेय पद
अलंकार - अनुप्रास, दृष्टांत

विशेष - ① कृषक जीवन के ज्ञान का संकेत।
② निर्गुण - सगुण के साथ - साथ कृषक और शहरी जीवन की तुलना भी।
③ ज्ञान को सूर अन्यत्र भी गठरी कहते हैं क्योंकि उसके सार को नहीं समझा जाता है।

——— x ———.

Gud 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये।

20

कबीर की काव्यभाषा हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक विवादास्पद प्रसंगों में से एक है। एक तरफ आचार्य शुक्ल ने इनकी भाषा को अक्खड़ और ~~बि~~ बेठिकाने की कहा है। प्रारम्भ में सधुक्कड़ी शब्द का प्रयोग ऐसी पंचमेल भाषा के लिए होता था जो सभ्य मानकों पर खरी नहीं उतरती।

परन्तु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। इन्होंने जिस बात को भाषा से जिस रूप में कहलवाना चाहा है उसे उसी रूप में कहलवा लिया है। बन गया तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर।"

वास्तव में कबीर की भाषा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है उसकी स्वाभाविकता। वह अनायास से संवाद ~~करती~~ प्रतीत होती है -

"कबिरा कूता राम का
मुतिया मेरा नाउँ।"

अथवा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"हमन है इश्क मस्ताना।
हमन को होशियारी क्या।
रहे आजाद या जग में
हमन दुनिया से यारी क्या।"

अपनी मातृभाषा में कबीर पंजाबी, राजस्थानी आदि शब्दों का भी प्रयोग करते हैं, जिससे इसकी संप्रेषणीयता बढ़ती है
जैसे - काहे री नलिनी तू कुम्हलानी।
तेरे ही नाल सरोवर पानी।
(पंजाबी, नाल = संग)

कबीर की मातृभाषा में लोकप्रचलित प्रतीकों का प्रयोग, अपने व्यवसाय के शब्दों का प्रयोग, सरल - प्रतीक योजना, अलंकार योजना भी प्रस्तुत है।
जैसे - "जल में कुंभ कुंभ में जल है
बाहर भीतर पानी।"
या
"दीपक दीपा तेल भरि
बाती दई अघट्ट।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वास्तव में जब तक कबीर पर नाथों का और इनकी आत्मसाधनात्मक अनुभूतियों का प्रभाव रहा, इनकी भाषा थोड़ी दुरूह प्रतीत होती है पर धीरे-धीरे वह स्वाभाविक रूप से सरल और संप्रेषणीय होती जाती है।

जहाँ तक अलंकार, प्रतीक, शब्द-संयोजन व बिम्बों आदि का प्रश्न है तो यह जान लेना चाहिए कि कबीर ने इनके लिए विशेष प्रयत्न नहीं किया था। इनकी सहज भक्तिभावना के कारण ही यह इनमें भी एक प्रकार की सहजता विद्यमान है।

इस प्रकार अपनी सहजता और संप्रेषणीयता में कबीर की भाषा प्रेमचंद और नागार्जुन की परम्परा की आधारशिला रखती है।

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्घाटन परम मनोहर है।" इस कथन के संदर्भ में सूर के भ्रमरगीत पर विचार कीजिये। 15

उद्धव के शुष्क ज्ञान के विपरीत गोपियों की भावप्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का जो उद्घाटन हुआ है वही भ्रमरगीत की प्राणवायु है। एक तरफ तो हम भ्रमरगीत में ग्राम-नगर, ज्ञान-भक्ति, निर्गुण-सगुण, शासक-जनता के द्वन्द्वों की झलक भी देखते हैं पर यह प्राणवायु ही भ्रमरगीत का सार है।

उद्धव के ज्ञान और योग को क्रमशः शुष्क और स्त्रियों के योग्य न बताकर गोपियाँ उसे नकार देती हैं:-

"ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।"

या

"आए जोग सिखावन पांडे।
परमारथी पुरानि लाए ज्यो बनजारे टांडे।"

गोपियाँ तो उद्धव को चिढ़ाने के लिए उनपर व्यक्तिगत व्यंग्य भी करती हैं:

"यह मथुरा काजर की कोठरी
जे आवहिं ते कारे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम कारे सुफलक सुत कारे
कारे मधुप भँवारे।'

परन्तु इस व्यंग्य के पीछे गोपियों का कृष्ण से अटूट स्नेह है। राधा की स्थिति यह है कि वह इस साड़ी से भी स्नेह करती है जो कृष्ण के स्नेह से भीग गई थी। और

"लोचन जलु कागद मसि मिलि कै
ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।"

वस्तुतः प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों के कारण ही गोपियों के भाव लोकजीवन से जुड़े-सहज, सरल और प्रभावी बन पड़े हैं। उद्धव का हृदय-परिवर्तन इसी का परिणाम है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) वर्तमान जीवन-संदर्भों में तुलसी की रामराज्य परिकल्पना की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसी की रामराज्य परिकल्पना वस्तुतः आदर्श शासन की परिकल्पना है जहाँ कलिमल और दुरावस्था का अभाव है, लोगों में भेदभाव नहीं है, शासन व्याप करने में सक्षम है और जनता सभी प्रकार के कष्टों से मुक्त है।

"दैहिक दैविक भौतिक तापा
रामराजु नहिं काहुहि व्यापा।"

इस प्रकार वर्तमान जीवन संदर्भों में रामराज्य की परिकल्पना को एक ऐसे यूटोपिया या आदर्श के रूप में देखा जा सकता है, जिसकी ओर क्रमशः बढ़ते जाना ही समाज का लक्ष्य है।

उदाहरण के लिए भारतीय संविधान के भाग-4 में उल्लिखित 'नीति निदेशक तत्त्व' हमारे सम्मुख ऐसे लक्ष्यों की ही प्रस्तावना रखते हैं। इन तत्त्वों को मानवाधिकारों के साथ संयुक्त रूप से देखने पर हमें रामराज्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की एक झलक देखने को मिल सकती है।

रामराज्य में जनता के सभी दुख समाप्त हो गए हैं और लोग हर्षित है:

"रामराज बैठे तिरलोका।
हर्षित भए गए सब सोका"

लोगों की गरीबी, अज्ञान, रोग व शोक का नाश हो गया है। इस रूप में तुलसी ने रामराज्य की परिकल्पना के माध्यम से राजधर्म के आदर्श को भी स्थापित किया है।

इस प्रकार मध्यकालीन दार्शनिक वाद-विवादों के परिप्रेक्ष्य को छोड़ दिया जाए तो रामराज्य की परिकल्पना आज भी सार्थक है।

———X———

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'रामचरितमानस' के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 20

'रामचरितमानस' को महाकाव्यत्व की कसौटी पर कसने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि रामचरितमानस स्वयं ही हिन्दी साहित्य में महाकाव्यत्व की कसौटी रहा है। ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु, रामचन्द्र शुक्ल से लेकर हजारी प्रसाद द्विवेदी और नगेन्द्र तक इस महत्त्व के रेखांकन के साक्षी रहे हैं।

एक तरफ तो रामचरितमानस कुलीन नायक, मंगलाचरण, सर्गों में विभाजन, रस, पताका-प्रकरी जैसे मध्यकालीन आदर्शों पर खरा उतरता है तो वहीं इसरी तरफ उदात्तता की आधुनिक कसौटी पर भी।

रामचरितमानस के महाकाव्यत्व पर आज उदात्त कथानक, उदात्त चरित्र, उदात्त भाव के साथ-साथ रस और साधारणीकरण जैसी विशेषताओं पर भी विचार करना जरूरी है। तुलसीदास ने रामकथा को आधार बनाकर भारतीय मानस से एक स्वाभाविक संवाद स्थापित कर लिया है। वैसे तो इस कथा को वे 'स्वांतः-सुखाय' कह रहे हैं पर वास्तव में यह 'कलिमल दहन' करने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वाली कथा है। रामकथा में वस्तुतः सत् की असत् पर विजय की सूचनाकथा कही गई है। इस कथा में राम ही नहीं वरन दशरथ, लक्ष्मण, हनुमान, वशिष्ठ, कैकेयी सभी अपनी-अपनी भूमिकाओं में आदर्श-चरित्र के रूप में उपस्थित हुए हैं। संभवतः ऐसा तुलसी के सामाजिक दृष्टिकोण के कारण सम्भव हो पाया, क्योंकि स्वयं उनके अनुसार कविता की कसौटी ही यह है- 'सुरसरि सम सब कहं हित होई।

कथा के प्रवाह में भी तुलसी मित्रता, परिवार त्याग, भाईचारे के आदर्श की स्थापना करते चलते हैं। उनके राम एक तरफ तो 'भय बिनु होय न प्रीति' कहते हैं पर इसरी तरह पत्नी के वियोग में संतप्त भी रहते हैं। पर उनके व्यक्तित्व में विभिन्न मानवीय गुणों का समन्वय है। एक स्थान पर विभीषण से वे कहते हैं-

"--सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
बल विवेक दम परहित घोरे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

छमा कृपा समता रजु जोरे
ईसु भजनु सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
बर बिग्यान कठिन को दण्डा।"

इस प्रकार राम विभिन्न मानवीय गुणों के मूर्तिमान स्वरूप हैं।

तुलसी के रामचरितमानस में इस मानवीय पक्ष में समन्वय की प्रवृत्ति मूल में विद्यमान है। क्योंकि उनके यहाँ -

"अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा।
उभय हरहिं भव संभव खेदा।"

निर्गुण-सगुण के साथ-साथ रामचरितमानस में परिवार- गृहस्थ, पंडित-शूद्र, ऊँच-नीच, शैव-वैष्णव का भी समन्वय भी दिखता है। स्वयं राम के मुख से तुलसी ने कहलवाया है -

"सिव द्रोही मम दास कहावा।
सो नर मोहि सपनेहुँ नहिं भावा।"

रामचरितमानस में लोकसंस्कृति की स्पष्ट छाप भी स्थान-स्थान पर दिखती है। शिल्पगत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि से संस्कृत और अवधी का ऐसा सुंदर समन्वय अन्यत्र नहीं मिलता। यद्यपि तुलसी कहते हैं कि - "कबित बिबेक एक नहिं मोरे" परन्तु अवधी भाषा के अद्भुत प्रयोग, सुन्दर कथा-योजना, संवादों में प्रवीणता (अंगद-रावण, विभीषण-मंदोदरी-रावण, परशुराम-लक्ष्मण), शांत रस की धारा में उत्साह, प्रेम, वियोग के क्षणों की सृष्टि, अलंकारों का समुचित प्रयोग (सांगरूपक इनका प्रिय अलंकार है), व चरित्र-योजना के लिहाज से भी इस कृति का महत्त्व अद्वितीय है।

इसीलिए महाकाव्यत्व की दृष्टि से तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' शीर्ष स्थान पर स्थित है।

———x———

12/20

Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर की भक्ति-भावना के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्था। कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this spa

कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक न लिखें। (Please do not anything except question numbe this space)

कबीर मूलतः भक्त है और इनका कविरूप इस भक्तरूप से ही उपजा है। प्रेम को भक्त कबीर और कवि-कबीर को जोड़ने वाली आधारेखा माना जा सकता है। वास्तव में कबीर की भक्ति भावना के विषय में यह जानकर ही चर्चा की जा सकती है कि वह जितना अपने युग से जुड़ती है उतना ही हमारे समय से भी।

एक तरफ तो कबीर की भक्ति-भावना पर हमें निम्न प्रकार से मध्यकालीन समय-समाज की छाप दिखती है-

1. गुरु की महत्ता (दीपक दीया तेल भरि —)
2. रहस्यवादी भावना
3. प्रतीकात्मकता
4. नाथपंथियों के प्रभाव से अंतर्साधनात्मक अनुभूतियों का प्रयोग (अवधू गगन मंडल घर कीजै —)
5. सिद्ध-भावना

वहीं कबीर की भक्ति-भावना की कई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ ऐसी हैं जो उन्हें हमारे समय में भी प्रासंगिक बनाती हैं। जैसे कि प्रेम ही उनकी भक्ति का आधार है और यह प्रेम समतामूलक व मानवीय-स्वभाव युक्त है। इसके लिए भक्ति के रूप में हमें अपने पूर्वग्रहों से मुक्ति पानी पड़ती है-

"कबिरा यह घर प्रेम का
खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै भुई धरै
सो पैसे घर माहिं।"

प्रेम और भक्ति का यह मिला-जुला स्वरूप मानव-निर्मित भेदों को नहीं मानता-

"जो तू बाँभन-बंभनी जाया
आन बाट ह्वै क्यों नहिं आया।
जो तू तुरुक-तुरकनी जाया।
भीतरि खतना क्यूँ न कराया॥"

इस भक्ति-भावना के प्रभाव से ही कबीर में अखण्ड आत्मविश्वास की सृष्टि हुई है, वे सब-कुछ को साफ़-फरमार कर चल

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देते हैं। शिल्प पर विशेष ध्यान न देकर भी वे अद्भुत काव्यभाषा की जो सृष्टि कर सके हैं, वह इसी विरोधाभास की उपज है।

वास्तव में कबीर की भक्तिभावना में एक समतामूलक मानवीय अंतर्धारा विद्यमान है- जो इनकी भक्तिभावना को और प्रासंगिक बनाती है।

———X———

ठीक है

6/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हर युग कविता की व्याख्या अपने समय और अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप करता है और यही काव्य की प्रासंगिकता का निकष है। सूर के उद्धव को शासक और प्रजा के बीच बिचौलिए नेता के रूप में भी देखा जा सकता है, परन्तु अर्थ को मात्र इतना ही सीमित नहीं कर देना चाहिए।

उद्धव एक तरफ कृष्ण के संदेश को गोपियों तक पहुँचाकर गोपियों को विरत करना चाहते हैं, इसके लिए वे तार्किक युक्तियों का सहारा लेते हैं। उद्धव ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं और गोपियों की सरलता को भी समझ नहीं पाते। वे शहरी जीवन के प्रतिनिधि हैं; अतः ज्ञानी होने के बावजूद भी वे लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पाते। पहले तक प्रतीक ठीक प्रतीत होता है।

परन्तु भ्रमरगीत-सार के अन्य कई आयाम भी हैं। दर्शन के लिए सगुण ज्ञान की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सरलता और स्वाभाविकता से उद्धव अंततः प्रभावित हो जाते है।

इसी प्रकार कृष्ण की महिमा के अनुसार वे गोपियों के स्वभाव परिवर्तन हेतु नहीं अपितु स्वयं उद्धव के ज्ञान व दंभ के खण्डन के लिए उद्धव को वहाँ भेजते है। उद्धव के प्रति गोपियों की वाग्विदग्धता भी इस प्रतीक में नहीं समाती। जब वे कहती है कि

"यह मथुरा काजर की कोठरी
जे आवहिं ते कारे॥"

या "आए जोग सिखावन पांडे।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टांडे।"

तो यह हास-परिहास जनता और बिचौलिए नेता के मध्य का नहीं। उद्धव की सरलता और ग्रहणशीलता भी उपेक्षित है।

इस प्रकार उपरोक्त प्रतीक की उद्धव के सम्बंध में सीमित उपयुक्तता है।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहीं नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

प्रस्तुत गद्यांश अज्ञेय कृत 'संवत्सर' निबंध से लिया गया है।

इसमें रहस्यवाद और जिज्ञासा की मिली-जुली मनोवृत्ति की ओर अज्ञेय का आकर्षण प्रदर्शित होता है।

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण बिस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है, जहाँ स्कन्दगुप्त अपनी अस्थिर मनोवृत्ति के कारण किंकर्तव्यविमूढ़ सा नजर आ रहा है।

प्रसाद की दार्शनिक प्रवृत्तियों का स्कन्दगुप्त की चरित्र-योजना पर विशेष प्रभाव पड़ा है। स्कन्दगुप्त अधिकार-सुख के प्रति विशेष रूप से आकर्षित नहीं है, जैसा कि प्रारम्भ से ही स्पष्ट है। यहाँ इसका मंतव्य है कि अधिकार-सुख वास्तव में तो कोई निर्णय-शक्ति प्रदान नहीं करता। मनुष्य नियति के हाथों की कठपुतली है, इसलिए मुझे शांति-विस्मृति और समाधि एक साथ चाहिए।

सौंदर्य - भाषा- संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली।

शैली - स्वगत संवाद शैली

4½/10 और बेहतर बनाएँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं–पर ऐसा मान?

प्रस्तुत प्रसंग मन्नू भंडारी के उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है जहाँ दा साहब के आडम्बर को चित्रित किया है।

लोकतंत्र में आडम्बर के माध्यम से मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए दा साहब मृतक के पिता को जातिगत भेदभाव व वर्गीय अंतर ध्यान न रखकर गाड़ी में बैठा लेते हैं। इसे लेकर जनता का कुछ हिस्सा हीरा से ईर्ष्या भी करने लगता है।

विशेष ① भाषा-शैली - सरल व सहज

② दा साहब का आडम्बर उपन्यास में धीरे-धीरे स्पष्ट होता है।

5½ / 10
गहराई लाएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' सृजन और सत्ता के द्वन्द्व को भी लक्षित करता है। प्रस्तुत गद्यांश में कालिदास इसी द्वन्द्व की मनोदशा को स्पष्ट करता है। अंत में कालिदास को यह महसूस होता है कि उसे सत्ता नहीं अपितु सृजन का चयन करना चाहिए था।

विशेष - परन्तु अस्तित्ववादी दृष्टि के अनुसार सृजन का चयन करने पर भी उसमें यह पीड़ा रहती।

4/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ड़) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

प्रस्तुत गद्यांश रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है जिसमें रामचंद्र शुक्ल के लोकमंगल के सिद्धांत की झलक देखने को मिलती है।

इनके अनुसार जीवन के सभी पक्षों में कर्म-सौंदर्य का प्रतिपादन ही आवश्यक है।

1/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद मूलतः शैव-प्रत्यभिज्ञा दर्शन से प्रभावित थे, जहाँ अद्वैतवाद के जीव-माया-ब्रह्म-ईश्वर की तरह पशु-पाश-शिव की स्थिति है। जीव की यात्रा आणव-पाशव से शिव की दिशा में थी। इस दर्शन में समरसता की विशेष स्थिति है, जहाँ रच्छा-ज्ञान व क्रिया तीनों मिल जाते हैं।

स्कन्दगुप्त नाटक में उन्होंने अपनी गहरी अभिरुचि को किस प्रकार घुलाया है यह द्रष्टव्य है-

(1) स्कन्दगुप्त का चरित्र, जो सामाजिक पद-प्रतिष्ठा से वीतराग है।
"अधिकार सुख कितना भयानक है।"

(2) देवसेना का चरित्र
जो कर्त्तव्य और प्रेम में कर्त्तव्य को वरीयता देती है और प्रेम के लिए मिलन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को अनिवार्य नहीं मानती।

3. ~~श्री~~ प्रकृति - प्रेम

4. जगत् की सांगीतिक अभिव्यक्ति

5. कर्त्तव्य पथ पर भी ध्वनि के ही प्रभाव से स्कन्दगुप्त स्थान - स्थान पर कर्त्तव्यच्युत हो जाता है।

6. स्वगत - संवाद (जो यद्यपि लम्बे हैं, वास्तव में नाटककार प्रसाद नहीं अपितु दार्शनिक प्रसाद का प्रभाव है।

इस प्रकार 'स्कन्दगुप्त' में प्रसाद की दार्शनिक भंगिमा इस जगत् को सत्य मानकर कर्त्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा देती है, पर दार्शनिक विवादों की अभिव्यक्ति से बौद्ध - ब्राह्मण संघर्ष जैसे दृश्यों की सृष्टि करनी पड़ी है और कई स्थानों पर पात्र अभिनय ही किंकर्त्तव्यविमूढ़ नजर आते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' एक महान कृति है और इसीलिए महान कृतियों की तरह इसकी व्याख्या भी कई आयामों में की जा सकती है। परन्तु यह भी स्पष्ट परिलक्षित होता है कि इस नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव सर्वाधिक है। इसे निम्नवत देखा जा सकता है-

1. चयन की स्वतंत्रता की केंद्र में है।
2. चयन के फलस्वरूप ही कालिदास और मल्लिका के जीवन में पीड़ा।
3. इस पीड़ा को गरिमापूर्ण ढंग से कालिदास का स्वीकार न कर पाना।
4. व्यक्ति का परिस्थितियों के वश में होना जैसे- कालिदास और विलोम
   " विलोम क्या है असफल कालिदास।-
5. सृजन की पीड़ा।
6. प्रतिभा को भी परिस्थितियों से प्रभावित दिखाया गया है।
   " प्रतिभा एक - चौथाई व्यक्तित्व का निर्माण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करती है, शेष कार्य प्रतिछाया द्वारा होता है।

7. सभी व्यक्तियों (चरित्रों का आधा-अधूरा होना।

8. अम्बिका - मल्लिका और कालिदास - विलोम के विपरीत दिखने वाले पात्रों में ही नहीं अपितु नाटक के शिल्प पर भी संक्षिप्त-अधूरे वाक्यों, प्रकृति की विराटता और व्यक्ति की लघुता, तनाव की उपस्थिति के रूप में अस्तित्ववादी प्रभाव देखा जा सकता है।

———— x ————

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

'भारत-दुर्दशा' नाटक एक तरफ पारसी रंगमंच से प्रभावित है तो इसरी तरफ यथार्थवादी नाटकों की पृष्ठभूमि का भी निर्माण करता है।

वस्तुतः भारत-दुर्दशा एक प्रतीकात्मक प्रकार का नाटक है, जिसे लिखा तो प्रहसन के रूप में गया है पर बीच-बीच में त्रासदी, यथार्थ के तत्व भी दिखते रहते है। भारत-दुर्दशा नाटक की रंगमंचीयता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है।

1. मनोभावों की प्रतीकात्मक प्रस्तुति
2. रंग-संकेत (वेशभूषा आदि)
3. सरल दृश्य-विधान (नाटक में कुल 6 दृश्य है)
4. उचित पात्र-योजना (गौण और कम महत्व के पात्रों को हटाकर अधिक संतुलित प्रस्तुति संभव)
5. बीच-बीच में लोकनाट्यों की शैली का प्रयोग।
6. बीच-बीच में कविताओं का प्रयोग। - जैसे -

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी"

7. नाटक का प्रवाह (नाट्य-योजना)
कथानक में समस्याओं के चित्रण से लेकर त्रासद प्रभाव तक)

इस प्रकार भारत दुर्दशा नाटक रंगमंचीयता के लिहाज से विशेष महत्त्व का है क्योंकि कथ्य के साथ-साथ रंगमंच का भी ध्यान रखा गया है, जो हिंदी नाटकों के लिए मार्गदर्शक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation